डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamS

(6) प्रश्न :- कनिष्क की उपलब्धियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- प्राचीन भारतीय शासकों में कनिष्क का स्थान महत्वपूर्ण है। वह एक साम्राज्य निर्माता महान योद्धा तथा कला धर्म एवं संस्कृति का संरक्षक था जैसे बौद्ध धर्म के इतिहास में कनिष्क को इसलिए तो विशिष्ट स्थान दिया जाता है। क्यों कि अशोक के समान ही कनिष्क ही ने बौद्धधर्म का मध्य ऐशिया में काफी प्रचार प्रसार हुआ।

जहाँ तक कनिष्क राजिया रोहन का सवाल है। इस संबध में विद्वानों के अलग-अलग मत है। फ्लीट महोदय कनिष्क को विक्रम संमक का संस्थापक माना है। दूसरी तरफ अन्य विद्वानों ने कनिष्क की राजिया रोहन की तिथि 125 ई० पू० से 144 ई० पू० तक माना है। वैसे यह बात अलग है। कि उसके राजिया रोहन से भी सक संबध का प्रारंभ होता है। जिसे भारत सरकार द्वारा व्यवहार में लाया गया है।

कनिष्क एक महान योद्धा और साम्राज्य निर्माता था उन्होंने कुषाण राज्यों का भारत में अधिक विस्तार किया उसके अभिलेखों, सिक्कों तथा साहित्य ग्रंथों से हमें उसके सैनिक अभियानों एवं साम्राज्य विस्तार की पूर्ण जानकारी मिलती है। लेकिन यह बात भी सही है

Scanned with CamS

कि जिस समय कनिष्क गद्दी पर बैठा था उस समय कुषाण सम्राज्य में अफगानिस्तान सिन्ध, तथा बैक्ट्रिया भी सम्मिलित थे। इतना ही नहीं बल्कि भारत में अपने राज्य का विस्तार में उन्होंने मगध तक किया। कल्हण की राज तरंगनि हमें यह ज्ञात होता है। कि उसने कश्मीर पर अधिकार कर लेने के बाद कनिष्कपुर नामक नगर बसाया था। इतना ही नहीं बल्कि तिब्बति साहित्य से हमें ज्ञात होता है। कि उसने अपने सेना के साथ ~~आध्योधिया~~ आयोध्या तक आक्रमण किया साकेत के राजा को युद्ध में पराजीत किया इसके बाद मगध की राजधानी पर पाटलिपुत्र तक किया तथा वहाँ से वह प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान अहस्य घोष और बुद्ध का शिक्षा पात लेकर अपनी राजधानी आपस लौटा था। कनिष्क ने भारत के बाहर मध्यऐशिया में भी युद्ध किया। कास नगर या कन्त तथा खेतान पर अधिपत करने के बाद चीनी सम्राट को भी पराजित किया कुछ समय के बाद कनिष्क स्वयं ही पराजीत हो गया। पहलीबार युद्ध में कनिष्क पराजित हुआ था। दूसरी बार वह पुनः विजय प्राप्त हो गया। वह सम्भवतः पार्थिया की राजा को भी युद्ध में पराजीत किया इसप्रकार मौर्य सम्राज्य के बाद कनिष्क ने पहली बार विशाल की सम्राज्य की स्थापना की जिसमें गंगा, जमुना, सिन्धुघाटी भी सम्मलित थी।

Scanned with CamS

(i) सम्राज्य निर्माता — कनिष्क के विजयों के परिणाम स्वरूप ही कुषाण सम्राज्य अराल समुद्र से गंगा की घाटी तक फैल गया दूसरी बात यह है। कि कनिष्क की अभिलेखों और सिक्के के प्राप्ति स्थानों से इस विशाल सम्राज्य की जानकारी मिलती है। वैसे यह बात अलग है। कि उसके अभिलेख, पेशावर, सारनाथ, मथुरा, तथा बिहार से भी मिले है। उसके अभिलेखों के अधार पर ही कनिष्क की सम्राज्य की सीमा पूर्व में बनारस के दक्षिण में बहावलपुर तक निश्चित की गई है। लेकिन सिक्कों के प्राप्ती स्थानो से पता चलता है। कि पूर्व में बनारस के आगे भी उसका सम्राज्य था। बिहार के में पाटलिपुत्र बक्सर और चिराज की खुदाओं से भी सिक्के भी मिले है। जिससे इन जगहों पर हमें कुषाण आदि पद्म की पुष्टि भी होती है। वैसे कुछ विद्वान दक्षिण भारत और बंगाल पर भी कनिष्क का अधिपत्य स्वीकार करते है। लेकिन इसके लिए हमें स्पष्ट प्रमाण कही नही मिलता।

(ii) प्रशासनिक व्यवस्था — सम्राज्य विस्तार के साथ ही साथ कनिष्क प्रशासनिक व्यवस्था पर भरपुर ध्यान दिया सबसे आश्चर्य की बात यह है। कि विजित क्षेत्रों पर अपना ध्यान जमाने के लिए

Scanned with CamS

उसने गौरव पुर्ण उपाधना भी की उसने चीनी और रोमन की सम्राज्यों की तरह देव पुत्र की उपाधियों उपाधन की उसके समय सम्राज्य की दो राजधानियों थी पुरुषपुर और मथुरा कनिष्क प्रशासनिक सुविधा के लिए प्रशासनिक व्यवस्था को लागु भी किया प्रशासनिक व्यवस्था को लागु करने पर कनिष्क कोई कसर नही छोडी। सरनाथ से प्राप्त अभिलेखो से हमे यही जानकारी मिलती है। कि बनारस मे उसके महा क्षतप्र और क्षतप्र के रूप मे शासन चलता था। शासन व्यवस्था मे कनिष्क स्वयं शासन का संचालन करता था इसक्रम मे उन्होंने कोई कसर नही छोडी।

(iii) धार्मिक निति — कनिष्क की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है। कि विदेशी होते हुए भी भारतीय धर्म से गहरी अभिरुचि थी। उस समय भारत मे बोद्धधर्म का काफी प्रचार प्रसार हो रहा था ऐसी स्थिति में कनिष्क बोद्धधर्म को स्वीकार कर लिया इतना ही नही बल्कि उन्होंने बोद्धधर्म का प्रचार मे तन मन धन से लग गया। इसीलिए तो भारतीय इतिहास मे बोद्धधर्म को सन रंक्षन में भारतीय शासको मे अशोक के बाद कनिष्क का नाम आता है। अशोक ने बोद्धधर्म के प्रचार के लिए अपने राजकीय कर्मचारी को काफी उत्साहित किया ही साथ ही साथ उन्होंने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा

को गाँधी वृक्ष लेकर विदेश भेजा था। लेकिन कनिष्क ने भी बौद्धधर्म का काफी प्रचार प्रसार किया था। इसीलिए तो बौद्धधर्म हर्षवर्धन, मातृचेत्र ने कनिष्क का काफी चर्चा की बौद्धधर्म से वे इतने प्रवाहित थे कि उसने कश्मीर में चौथी बौद्ध सभा का आयोजन करवाया था। इसकी अध्यक्षता वसु मित्र ने की थी। इतिहास में कनिष्क के इस सभा का विशेष महत्व है। क्योंकि इस सभा का एक मात्र उद्देश्य विभिन्न बौद्धी विद्वानों में प्रचलित मतभेद को दूर करना था। इसीलिए तो यह सभा छः महीना तक अरबरल चलती रही। अतः हम कह सकते है। कि कनिष्क ने अशोक की तरह बौद्धधर्म का काफी प्रचार प्रसार किया इस क्रम में उन्होंने अनेक चैत्रगों विहारों एवं स्तुपों का निर्माण करवाया इस क्रम में वे पेशावर में एक भव्य स्तुत बनवाये थे। इतना ही नही बल्कि वे बौद्धधर्म प्रचार प्रसार के लिए चीन एवं मध्यएशिया में धर्म प्रचारक भी भेजे थे। वैसे तो कनिष्क बौद्धधर्मी लम्बी था लेकिन उसकी एक बहुत बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने किसी दूसरे बौद्धधर्म जबरदस्ती अपनाने का प्रयास कभी नही किया। वे सभी धर्मों का आदर करते थे। इसका प्रमाण हमें प्रचलित सिक्के से मिलता है। क्यों कि

Scanned with CamS

कुछ ताम्र सिक्के में उसे वेदी पर बली चढ़ाते दिखया गया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है। कि कनिष्क अपने राज्य में सभी धर्मो का आदर और सम्मान करता था।

(iv) कला एवं साहित्य का संरक्षण – कनिष्क की उदारता थे कुषाण काल में कला एवं संस्कृति की काफी प्रवति हुई स्थापत कला एवं मूर्ति कला का काफी विकास हुआ। इसक्रम कनिष्क में पुरुष पुर्व में एक विशाल स्तूक का निर्माण करवाया था जिसकी चर्चा चीनी यात्री वेनसान अपने विवरणों में की है। कश्मीर में उन्होंने कनिष्क पुर नामक नगर बसबाया है। जो आज की कनिष्क का नाम दिखलता है। इतना ही नही तक्षशीला का नया नगर कनिष्क ने ही बनबाया था। कनिष्क युगीन कला का अन्दर स्थापक नमुना मथुरा का देव कुल और नाग मंदिर वे विद्वानों को समुचित सम्मान देते थे। इसीलिए तो उसके दरबार बसुमित्र, अश्वघोष नागा अर्जुन जैसे विद्वान एवं दर्शनिक रहते थे। इन विद्वानों ने संस्कृति में उस समय अनेक ग्रंथों की रचना की। अश्वघोष ने बुद्ध के जीवन के सम्बन्धित जीवन चरित्र उसी समय लिखे थे। प्रसिद्ध चिकित्सा चरक कनिष्क का ही समकालीन दरबारी था। इतना ही नही बल्कि कनिष्क का भारत एवं मध्यएशिया के साथ व्यापारिक संबध भी

Scanned with CamS

था और यह व्यापारिक संबंध धीरे-धीरे सांस्कृतिक संबंध के रूप में बदलता चला गया।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं। कि भारत के उत्तरी - पश्चिम सीमा पर जब राजनैतिक अवस्था उत्पन्न हुई तब तक भारत विदेशी आक्रमण का समना करना पड़ा है। मौर्य उत्तरकाल के कनिष्क भी उपरी को चरितार्थ करता है। लेकिन उसकी एक विशेषता यह भी है। कि वे विदेशी होते हुए भी धीरे - धीरे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति होते हुए भी इस प्रकार मिल गये कि लगता ही नही था कि वे विदेशी थे। खासकर बौद्धधर्म से इतने प्रवाहित हुए की उन्होंने इस धर्म को उच्च शीखर पर पहुँचा दिया। इसिलिए तो बौद्धधर्म के प्रचार - प्रसार के मामने में अशोक के बाद कनिष्क का नाम आता है। दूसरी बात यह है। कि उसकी बहुत बड़ी विशेषता थी कि वे विद्वानो को काफी संरक्षण प्रदान किये इसीलिए तो बड़े - बड़े विद्वानो उसके राज्य की शोभा बढ़ाते थे। अतः हम कह सकते है। प्राचीन भारतीय इतिहास में कनिष्क का नाम सर्वश्रेष्ट है।

THE END

Scanned with CamS